रात्री क्लास 23-10-67 ओम शान्ति 23/10

तुम बच्चे हो वेहद के रेक्टर्स तो बेहद सृष्टि का ज्ञान बुध्दि में रहना चाहिये। तुम्हारी बुध्दि में सा
है। पहले पहले मूल वतन। सूक्ष्म वतन फिर है सृष्टि का चक्र। जानते हो कि हम सूर्य वंशी थे फिर चंद्र
वेश्य वंशी बने। अब यह अन्तिम जन्म है शूद्र वंशी का। अब तुम ट्रांसफर होते हो। बीज और झाड़ बुध्दि में
में है। सब समझ में आ जाता है। उसे बोया जाता है फिर फल निकलता है। तुम भी जानते हो हमारा
पर कौन सा है। फिर कैसे पार्ट बजाते है। घर भी याद आता है। चक्र भी याद आता है। हम कहते हैं = सेकन्ड
में जीवन मुक्ति मिल सकती है वो कोई मन्दिर में नहीं मिलती। यह वो सिर्फ गायन करते है। बाप तो रास्ता
बताते है। तुम बच्चे उंच ते उंच को जान गये हो। बाकी 84 का चक्र भी बुध्दि में आ जाता है। गोया तेरा
तुम भी नालिजफुल हो जाते हो। बाबा में तो नालिज है ही। मूल वतन, सूक्ष्म वतन और स्थूल वतन। फिर कह
है 84 लाख। सब को ऐसे समझाना होता है। चक्र को फिराओ तो सब याद आ जावेगा। जैसे बाप समझाते है
तुम बच्चों को भी यही रहना चाहिये कि हम भारतवासी जन्म कैसे लेते है। सिमर्ण करना चाहिये कि हम आ
आत्मा है पार्ट बजाने आती है यह कोई बड़ी नालिज नहीं है। बहुत सहज है। पोता मेल भी जरूर देखना है।
बाबा राय देते है रोज अपना पोता मेल निकालो। देवी गुण धारण करो। मीठा तो बहुत बनना है। बहुत प्रेम
से समझाना है सब समय वेस्ट न करना है। नहीं तो फिर पछताना पड़ेगा। बाबा को भी तो याद है न पास्ट
लाइफ ... आती थी इतनी लम्बे हम बाहर में ... है। छोटे तीखे जा रहे है। यह भी पढ़ाई है न। अपन
पर लजा आवेगी यह कितना हुशियार है। तो सीखो कल्प 2 का पता पड़ जाता है। कल्प 2 यही पद पा ...
रहेंगे। बाप कहते है खुब पुरुषार्थ करो। गेल्प कर सकते हो। 25 वर्ष जो कि गेल्प न कर सके सो ऐक वर्ष में
6 मास में कर सकता है। तकदीर में न है। तो तदबीर क्या करे। प्रैक्टिस करनी चाहिये। यहाँ सीखने लिये समय
चाहिये प्रैक्टिस करने का यहाँ चांस अच्छा है। बाबा कहते है किचन में हम योग में रह कर खाना बनावेंगे
तो इसमें ताकत भरेगी। टेव पड़ जाये तो प्रपक्ता हो जावेंगी। तुम बच्चे सर्विस पर हो न। बहुत अच्छी
सर्विस है कल्याण बहुत होता है। तुम्हारा है सब गुप्त। सर्टेन है बच्चों का कल्याण ही होना है। बाप समझाते
है कल्याण लिये। मित्र संबंधि आद को भी कोशिश करना है। अच्छा ज्ञान में नहीं आते हम शुध्द भोजन बनाये
खिलाते है। तुम बच्चे हाथ शिव बाबा के। बच्चे कल्याण कारी बने प्रेम से बाप की याद में बनाने से भी सब
बुध्दियां आ जाती है। विवेक भी कहता है तुम खैंच सकते हो कि। अवस्था भी हर्षित चाहिये प्यार से समझाओ।
प्यार का सागर बनना है। क्रोध का सागर कब देखा है? (रावण) क्रोधी खाना पकावेंगे तो कि खाने वालों को
असर आ जावेगा। तुम स्वीट बच्चे गाये हुए हो। भारत माताये हो। ऐसा बनना है ... मनुष्य तो चित्र बनाते
है। तुम ट्रांसफर हो फिर वही बनते हो। जो 5000 वर्ष पहले देवी देवतायें थे हम फिर सो बन रहे है। यह
याद गार किसकी बुध्दि में नहीं है। हम जो ऐक्यूरेट थे फिर बन रहे है। तुमको पता है हम क्या बनने वाले
है। बहुत लवली होते है। श्याम सुंदर का भी राज़ तुमने समझा है कृष्ण तो विश्व का प्रिन्स था। फिर इनको
गांव का छोकरा क्यों कहते श्याम सुंदर क्यों कहते है? गोरा जरूर सतयुग में होगा। यह कोई की बुध्दि में अर्थ
अर्थ नहीं होगा। तुम बच्चे त्रिकाल दर्शी त्रिनेत्री बनते हो। त्रिलोकी नाथ तो कोई बन नहीं सकता। फिर
घर जाते हैन। तीन लोक मूल वतन सूक्ष्म वतन स्थूल वतन आत्माओं ... का लोक उनके भी मालिक बनने
वाले हो। तुम्हारी महमा करते है। सूक्ष्म वतन के भी मालिक बनते हो के वहां निवास करते हो। तीसरा नेत्र
भी बच्चों को मिलता है। हमेशा विचार सागर मथन करो। हम त्रिमूर्ती बनते है, तीनों का बाप त्रिमूर्ती शिव
कहना पड़े। तीनों का बाप फिर तीनों से कार्य कराते है। ब्रह्मा का बाप तो बन सकते है। विष्नु का बन स
है? रचना है न। आत्माओं का बाप तो है परंतु शारीरिक बाप तीनों का नहीं कहलाय सकता। ल०
किसके बाप बनते है। इन सब बातों में भी जाना न है। नहीं तो याद की यात्रा टूट पड़ती
ये नालिज दी है। इस समय बाप और बच्चों का पुरुषोतम संगम युग है। याद में रहते रहो। भाग